CHETANA
International Journal of Education
Peer Reviewed/Refereed Journal
(ISSN: 2455-8729 (E) / 2231-3613 (P))
Impact Factor
SJIF 2022 = 6.261
आलेख
Received 25.11.2022 Reviewed 28.11.2022 Accepted 08.12.2022

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

वरिष्ठजनों के वर्तमान मुद्दे और चुनौतियाँ (केस स्टडी – कोटा शहर के संदर्भ में)

*महेश शर्मा
**डॉ. सुबोध कुमार

मुख्य शब्द – वृद्धाश्रम, केस स्टडी, विवशता, बीमारी आदि.

सारांश

इस केस स्टडी मे कोटा जिले के विभिन्न क्षेत्रो मे रहने वाले वरिष्ठजनो का अध्ययन किया गया है। हम जिन लोगो का अध्ययन कर रहे है उनका काल्पनिक नाम इसमे दिया जा रहा है लेकिन यह वास्तव मे उनके निजी जीवन पर आधारित है। यह केस स्टडी उत्तरदाताओ के मानसिक व शारीरिक स्थिति के बारे मे जानकारी देती है। इस केस स्टडी के परिणाम वरिष्ठजनो के भावनात्मक अलगाव, निराशा, कुण्ठा, जीवन से संतुष्टि को प्रदर्शित करते है।

उद्देश्य - इस केस स्टडी का मुख्य उद्देश्य उपेक्षित वृद्धजनों का अध्ययन वर्तमान परिप्रेक्ष्य मे करना है। उनके रहने, खाने, मनोरंजन की गतिविधियॉ, जीवन मे संतुष्टि व गुणवत्ता से सम्बंधित तथ्यो को एकत्रित करना भी इस अध्ययन का अन्य पक्ष है।

केस स्टड़ी – 1

यह केस स्टड़ी कोटा के कुन्हाड़ी क्षेत्र में रहने वाले सोहन मोटवानी पर किया गया। इनका आयु 75 वर्ष के लगभग है, ये पूर्व में किराना स्टोर से सम्बंधित व्यवसाय में कार्यरत थे। इनके 3 बच्चे है और वे अपना काम - धंधा देख रहे है, इनकी पत्नी अब जिंदा नहीं है। इनकी शिक्षा 10 वीं तक हुई है और वे अपने घर की आर्थिक स्थिति ठीक बताते है। वे इस वृद्धाश्रम में पिछले 2 सालों से रह रहे है। यहॉ वृद्धाश्रम में रहने को वे इच्छा से आना बताते है। परंतु अवलोकन करने से ऐसा नही लगता है आगे खुलकर बात करने पर उन्होने बताया कि उनके बच्चों के पास उनको रखने के लिए मकान मे पर्याप्त जगह नहीं है और वे उनका खर्च उठाने मे असमर्थ है, इसलिए उन्हें यहाँ विवश होकर आना पड़ा।

यहाँ वृद्धाश्रम में रहने को वे अच्छा अनुभव बताते है। यहाँ उनके खान-पान की अच्छी व्यवस्था है लेकिन अनुशासन के साथ मे। यहाँ उनके सुबह एवं शाम को नाश्ते व खाने की उचित व्यवस्था है। यदि किसी वृद्धजन को देरी से सुबह का नाश्ता छुट जाए तो उन्हें भोजन तक का इंतजार करना पड़ता है। इस वृद्धाश्रम में रहने से सम्बंधित समस्याओं को उन्होने ज्यादा जिक्र नहीं किया। उनका कहना है कि यहाँ शांत व सुरम्य वातावरण है। यदि वृद्धाश्रम के बाहर चारों तरफ चार दीवारी का निर्माण हो जाये तो आवारा पशु, जानवरो का खतरा नहीं रहे। वैसे तो सोहन जी की स्वास्थ स्थिति ठीक है और वे वृद्धाश्रम परिसर में ही टहल लेते है। किन्तु कभी अधिक तबीयत खराब होने पर यहॉ के वृद्धजनो को अस्पताल मे हंस्तांतरित कर दिया जाता है और यहॉ के केयर–टेकर उनका पूरा ध्यान रखते है और सम्बंधित वृद्ध के परिजन को भी सूचित कर दिया जाता है।

यहाँ पर वे अपनी मनपसंद गतिविधियाँ या मनोरंजन लगभग पूरा कर लेते है – जैसे अच्छा खाना, घूमना, टी वी पर मनपसंद कार्यक्रम देखना आदि। आगे वे बताते है वृद्धजनों से सम्बंधित संस्थाओ का निरंतर समय-समय पर निरीक्षण होते रहना चाहिए ताकि वे अपना काम सही तरीके से कर सके और अपने आपको अपडेट कर सके। वृद्धजनो से सम्बंधित समस्याओ पर सरकार को सुझाव

देते हुए उनका कहना था कि पेंशन व्यवस्था बहुत अच्छी स्कीम है। लेकिन मंहगाई मे वृद्धि होने इसमें वृद्धजनो के लिए बढ़ोत्तरी की जानी चाहिए। कोविड-19 से सम्बंधित अपने अनुभवों के बारे में उन्होने बताया कि वे इस महामारी के समय घर पर ही थे। उन्हे इस महामारी से ज्यादा भय का माहौल उत्पन्न करने पर आश्चर्य व्यक्त किया। उन्होने कहा कि कोविड–19 में उन्हें बिल्कुल भी डर नहीं लगा। क्योंकि वे जीवन में सब कुछ देख चुके है और उनके पास खोने को कुछ भी नहीं है। यदि उन्हें इस बार मौत भी आ जाये तो परवाह नहीं, उनके अन्दर का डर खत्म हो चुका था। उनका कहना है कि यदि कोई भी संस्था समर्पित होकर वृद्धजनों के लिए कार्य करे तो उनके लिए कोई समस्या नहीं है।

केस स्टड़ी – 2

यह केस स्टडी कोटा क्षेत्र के नयागाँव में रहने वाले रामनिवास यादव के जीवन से संबधित है। इनकी आयु 66 वर्ष है, रामनिवास जी साक्षर नहीं है। पढ़े–लिखे नहीं होने के कारण उन्हें काफी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इनके परिवार में 2 लडकियां व 1 लड़का है, इनकी पत्नी का देहांत हो चुका है। इन्होनें जीवनभर की कमाई से अपने परिवार के रहने के लिए खुद का घर बनाया। जब तक ये परिवार के लिए कमा रहे थे, इनके परिवार की माली–हालत ठीक थी। धीरे वृद्धावस्था के कारण ये अस्वस्थ रहने लगे और शरीर भी कमजोर पड़ने लगा। इनके कोटा में ही 3 प्लाट थे, जो इनके पुत्र ने धोखाधड़ी करके पहले अपने नाम करवाये और इनका बेचान दूसरे को कर दिया। इससे रामनिवास की सारी जमा–पूंजी चली गयी और बेटे ने इन्हें घर से निकाल दिया और विवश होकर 2 साल पहले इन्हें राजकीय वृद्धाश्रम में शरण लेने को मजबूर होना पड़ा।

इस वृद्धाश्रम में रहने पर वे अपनी विवशता एवं लाचारी प्रकट करते हैं। यहाँ रहना उनके लिए समय व्यतीत करना मात्र है, जीना नहीं। इस उम्र में उन्हें थोड़ा कम सुनाई देने लगा है, जब कभी वे बीमार होते हैं, तो यहाँ उनकी अच्छी देखभाल होती है। उनके लिए मुफ्त दवा व अन्य व्यवस्था की जाती है। वर्तमान में इनकी आय का कोई स्त्रोत नहीं है, और यहाँ पर अपने छोटे–मोटे शौक पर खर्च करने के लिए पैसा ना होने की कमी महसूस होती है। इनकी सरकार व समाज से अपील है कि वृद्धावस्था में इनकी पेंशन में वृद्धि की जाए और समय पर पेंशन नहीं मिलने की शिकायतों का निवारण समय पर किया जाये। इनकी एक और प्रार्थना है कि इन्हें इनकी प्लाट और जमीन, जो इनके बेटे द्वारा हड़प ली गई है वापस दिलायी जाये। वृद्धाश्रमों में आने वाले वृद्धों की इस समस्या से निपटने के लिए इनका सुझाव है कि समाज में वृद्धों के प्रति सकारात्मक माहौल बनाया जाये। वृद्धजनों और युवा पीढ़ी के मध्य जो वैचारिक मतभेद, पीढ़ी अंतराल है उसे दूर कर सामंजस्य स्थापित किया जाये। ताकि वृद्धजनों की घर–वापसी हो सके और वे अपनी अंतिम श्वास अपने परिवार व बच्चों के साथ शांति के साथ इस संसार से अलविदा कहे।

केस स्टड़ी – 3

यह केस स्टडी कोटा के रंगबाड़ी क्षेत्र में रहने वाले मोहन लाल शर्मा की है। ये ब्राह्मण जाति के हैं, इनकी आयु लगभग 72 वर्ष है। इनकी शिक्षा 5 वीं तक हुई है, ये अपनी आजीविका का निर्वाह मजदूरी करके अपने परिवार का भरण–पोषण करते थे। इनके परिवार में इनके 4 बच्चे है और ये सबका विवाह कर चुके है। इनके घर के माली–हालत ठीक नहीं है, और इनका परिवार किराये के मकान में रहकर गुजर–बसर करता है। किराये का घर, बढ़ती मंहगाई, इनके खराब स्वास्थ्य के कारण उन्हें यहाँ के वृद्धाश्रम में आकर रहना पड़ा। इनका इन दिनों स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता है। ये हार्ट–पेंशेट है, और हाई ब्लड प्रेशर की बीमारी से भी जूझ रहे हैं, इसके लिये इन्हें निरन्तर दवाओं का सेवन करना पड़ता है। इन सभी दवाओं का खर्च निशुःल्क वृद्धाश्रम उठाता है। जब कभी–कभी इन्हें गंभीर स्वास्थ्य समस्या होती है तो यहां देखभाल अच्छी होती है।

इन्होनें यहाँ रहने में उन्होने किसी प्रकार की समस्या का जिक्र नहीं किया। कभी–कभी इन्हें यहाँ बस घर की कमी महसूस होती है। ये सुबह–सुबह यहाँ के परिसर में ही घूम लेते है, और बाकी समय यहाँ रहने वाले अन्य लोगो से बातचीत कर, टी.वी. देखकर भजन–कीर्तन कर अपना मनोरंजन करते हैं। इनकी भी सरकार से वृद्वावस्था पेंशन में वृद्धि करने की अपील है। इनकी शिकायत है कि समय पर पेंशन नहीं मिलती है जिसे नियमित किया जाना आवश्यक है। सामाजिक कल्याण से जुड़ी हुई सभी संस्थाओं का औचक निरीक्षण किया जाना चाहिए। वृद्धजनों से जुड़ी समस्याओं पर इनका सुझाव है कि वृद्धाश्रमों में वृद्धजनों के लिए सुविधाओं का विस्तार किया जाना चाहिए। कोविड–19 महामारी के अनुभव के संबंध में इनका कहना था कि ये लोग जहाँ रहे वहाँ उन्हें

अकेलेपन व तनाव का अनुभव हुआ। अस्पताल में काम करने वाले कर्मचारियों का व्यवहार इनके साथ ठीक नहीं रहा। कर्मचारियों के उपेक्षित व्यवहार से उन्हें निराशा महसूस हुई।

केस स्टड़ी – 4

यह केस स्टडी कोटा क्षेत्र के रेलगाँव में रहने वाले हरिमोहन पांचाल के जीवन से संबधित है। इनकी आयु 80 वर्ष के लगभग है, यह 5 वीं तक पढ़े–लिखे है। पूर्व में यह खेत में मजदूरी करने का कार्य करते थे। इनकी माली–हालत कुछ ज्यादा अच्छी नहीं है। इनके परिवार में इनकी पत्नी व 4 बच्चे हैं। पत्नी का पूर्व में देहांत हो चुका है तथा सभी विवाहित है। इनकी अधिक उम्र के कारण इनके बच्चे इन्हें साथ नहीं रखना चाहते है। इसलिए विवश होकर इन्हें वृद्धाश्रम की शरण लेनी पड़ी। इससे पहले भी वे कई वृद्धाश्रमों में रह चुके है, लेकिन यहाँ तुलनात्मक रूप से इन्हें अच्छा लगा। इन्हें यहाँ नाश्ता, खाने से संबधित कोई समस्या महसूस नहीं हुई। यहाँ विभिन्न संस्थाओं द्वारा कई कार्यक्रम आयोजित किये जाते है, जिससे वृद्धजनों को काफी सहयोग मिलता है।

यहाँ पर ये भजन–कीर्तन, घूम–फिर, टी.वी. देखकर अपना समय व्यतीत करते है। अधिक उम्र के कारण इन्हें कम सुनाई व दिखायी देता है। कभी–कभी अपनी मनपंसद गतिविधियॉ करने के लिए इनके पास पैसा नहीं होता है, इससे ये निराशा महसूस करते हैं। यह वृद्धजनों के लिए सरकार व समाज से कोई अपेक्षा नहीं करते है और ना ही कोई सुझाव देना पंसद करते हैं। ये अपने से संतुष्ट है और जो है उसी में खुश रहकर अपना जीवन व्यतीत कर रहे है। कोविड–19 महामारी में ये अपने गाँव चले गए और देशी खान–पान व जड़ी–बूटियों व औषधियों का सहारा लिया।

निष्कर्ष

भारत में वरिष्ठजनों की संख्या में पिछले कुछ दशकों में तेजी से वृद्धि देखी गई है। संयुक्त परिवारों में कमी एवं एकाकी परिवारों में वृद्धि, भौतिकवाद व आर्थिक परिस्थितियों में परिवर्तन ने वृद्धजनों के लिए नई समस्याओं को जन्म दिया है। भारतीय संस्कृति के जीवन मूल्यों में निरंतर गिरावट देखने को मिल रही है। इसके कारण व्यक्ति, परिवार समाज निरन्तर पतन की ओर अग्रसर हो रहा है। हमारे यहाँ सामाजिक सुरक्षा प्रणाली का अभाव है, जिससे वृद्धजनों का परिवार में समायोजन करना कठिन होता जा रहा है। इस अध्ययन में अधिकांश उत्तरदाताओं की आयु 70–80 वर्ष है लेकिन इनमें से अधिकांश वृद्धजन अपनी दैनिक गतिविधियों को स्वंय करते है उन्हें किसी के सहयोग की आवश्यकता नहीं है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- अर्बर एस, जिन जे, जेंडर एंड लेटर लाइफ, सेज लंदन : 1991
- बेक ए.टी. वार्ड सी एच मेंडलसन एम मोक जे, एन इन्वेन्ट्री फॉर मेजरिंग डिप्रेशन, अर्चाइव अव जनरल साइचैरिटी 1961 : 4 : 561–571
- बुस एम. एल सीमैन टी, मैरिल एस. एस ब्लेजर डी जी. द इम्पेक्ट अव डिप्रेसिव सिम्टमलॉजी ऑन फिजिकल डिसअबलिटी : मेक ऑर्थर स्टडीज अव सक्सेसफुल एजिंग, अमेरिकन जर्नल अव पब्लिक हेल्थ, 1994 : 84 : 1796–1799
- बोस आशीष एंड माला कपुर शंकरदास 2004 ग्रोंइग ओल्ड इन इंडिया : बी आर पब्लिसिंग कॉरपोरेशन, न्यू दिल्ली
- शाह पी.पी. 1993 ''द एलडर्लि इन गुजरात'' डिपार्टमेंट अव सोशियोलॉजी गुजरात यूनिर्वसिटी अहमदाबाद
- यूनाइटेड नेशंस 2002 ''वर्ल्ड पॉपुलेशन एजिंग 1950–2050'' डिपार्टमेंट अव इकोनॉमिक एंड सोशल अफेयर्स, पॉपुलेशन डिवीजन, न्यूयार्क.
- डब्लु एच ओ 2001 ''एटलस : कन्ट्री प्रोफाइल्स ऑन मेंटल हेल्थ रिसोर्स'' जिनेवा.

Corresponding Author
* *महेश शर्मा (शोघार्थी) कोटा विश्वविघालय कोटा*
** *डॉ. सुबोध कुमार, शोध पर्यवेक्षक समाजशास्त्र विभाग*
राज. कला कन्या महाविधालय कोटा
Email-maheshsharma8524@gmail.com, Mob-09829042595